

# कर्मेन्मरण



शिवांश शलभ



# देखो आज चमकते तार।

धीरे से यह तारे निकले,  
धीरे से यह नभ पे फैले,  
जात न कब पा नेतृत्व शशि का छा गए है ,यह नभ पे सारे  
देखो आज चमकते तार।

आज मुझे दिक्के यह तारे  
नजर मुझे आते यह तारे  
खैर मानते हैं की नभ पर छा न गए है बदल काल।  
देखो आज चमकते तार।

काले नभ पर अंकुर से है,  
टिम-टिम कर यह अश्रु बहते,  
साथ किसी दुखिया का देते, गात तळ का भिंगो है जात।  
देखो आज चमकते तार।

पल-पल में यह निकट है आते,  
सीख सिखाते मुझको तारे,  
वियोग सवेरे का अभी भूलकर, साथ निभाते हैं यह तार।  
देखो आज चमकते तार।

अब जब इनको देख रहा हूँ,  
सोच अभी मन में यह रहा हूँ,  
आज धरा से देख रहे, कल उनमें ही सब है मिल जात।  
देखो आज चमकते तार।



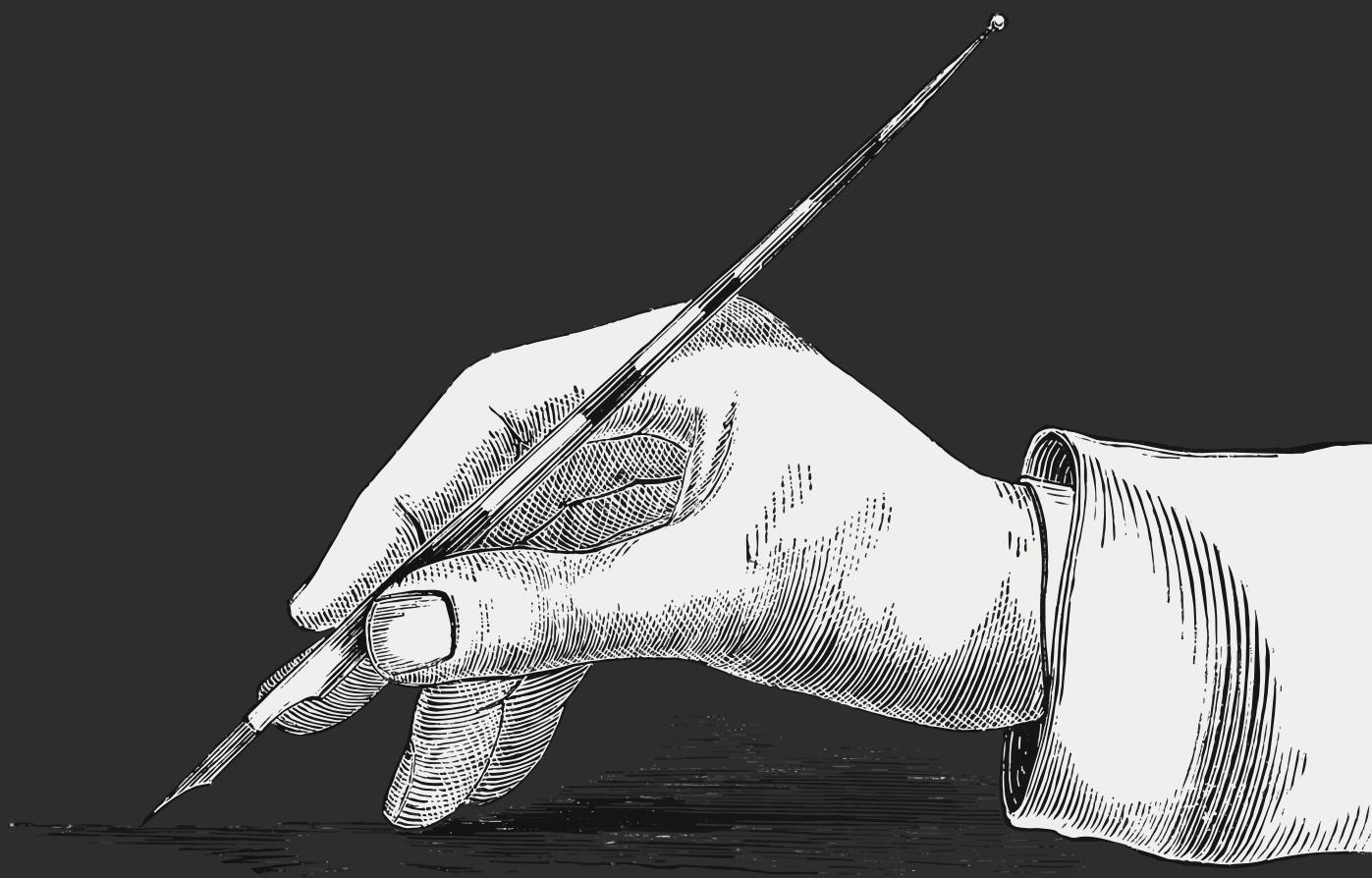
# लक्ष्य की खोज

है तिमिर का वास नभ पर,  
और उसका राज थल पर,  
मैं बने उज्ज्वल दिया चलता रहा सघर्ष करता  
रात सुनी गान गाता चल रहा, मैं खोजता हूँ लक्ष्य अपना।

हैं जगत अब स्वप्न थल में  
दूर हैं असली जतन से  
किन्तु मैं इस यामिनी में भी चला, बढ़ता रहा हूँ  
रात सुनी गान गाता चल रहा, मैं खोजता हूँ लक्ष्य अपना।

है जगत अब मौन दुख में  
मैं सुखी गायक सफर में  
अब खुठी के राग गाता, तोड़ता मैं मौन चलता  
रात सुनी गान गाता चल रहा मैं खोजता हूँ लक्ष्य अपना।





# साथी है विश्वास मन में?

यह जगत है या समझ है  
जो में समझा तू न समझा  
अब नहीं बाकी कही भी  
एक भी संस्कार मैं में  
साथी है विश्वास मन में?

यह जगत भी अब मारा सा,  
है नहीं इंसान इसमें,  
हैं तो केवल वह मनुज अब,  
इंसानियत जिनमे नहीं है,  
साथी है विश्वास मन में?

हो गयी है रात मन में,  
खो गयी है बीत मन में,  
अब किरण बस दूर दिखती,  
है तिमित का राज मन में,  
साथी है विश्वास मन में?

भूमि पर थी दूब पहले,  
अब तो केवल फर्फा दिखती,  
थे जहा मस्तिष्क नर के,  
छा गयी है मरीन मन में,  
साथी है विश्वास मन में?

बन गया है जड़ जगत अब,  
है नहीं अब विचार मन में,  
था जहा उल्लास पहले,  
अब नहीं उत्साह मन में,  
साथी है विश्वास मन में?

# साथी कर विश्वास मन में!

यह स्थिति है आज तेझ़,  
कल न होगी हार तेझ़,  
तू निराशा से घिरा है,  
नव उमण्ड तेरे साथ होगी,  
आज तेझ़ हार पर यह विश्व सारा हंस रहा है,  
कल झुकेंगे शीश सबके, जीत की देंगे बधाई,  
आज अपने हाथ्य को बस तू भूला दे अपने मन से,  
साथी कर विश्वास मन में!

हार का गरल विनाशक,  
जित की सुधा सुहानी,  
तू गरल तो पी चूका,  
अब सुधा की बाटी आई,  
किन्तु इसके स्वाद को भुला न जाना अपने मन से,  
याद रखना और चलना पीने जीत की वह प्याली,  
आज अपनी भूल को भी तू बिठाना अपने मन में,  
साथी कर विश्वास मन में!

हार में तू है अभी,  
उस यामिनी में है अभी,  
याद रखना किन्तु एक पल आएगी दिन की घड़ी,  
आएगी रवि की सवारी,  
लाएगी खुशिया तुम्हारी,  
किन्तु उस काली छवि को याद रखना अपने मन में,  
साथी कर विश्वास मन में!



# शिक्षक दिवस

शिष्य आपकी हम हैं सर जी,  
आप हमारे पिता समान,  
रिश्ता है यह बहुत अनोखा जैसे मैं माटी आप कुमार।

जान अर्जन का खेल अनोखा,  
जान के पथ पर चलने जैसा,  
जब भी मिले जान आपसे उसको अपने भीतर लाना।  
रिश्ता है यह बहुत अनोखा जैसे मैं माटी आप कुम्हार।

जो भी होता है मन,  
मैं समझ आपको आ जाता,  
पढ़ने का जब मन ना हो तो पड़ा ना आपको आ जाता।  
रिश्ता है यह बहुत अनोखा जैसे मैं माटी आप कुम्हार।

सही गलत का भेद बताते, कलश व्यक्ति को सही बनाते,  
सन मार के जान से सबका उज्जवल भविष्य आप  
संवारते।  
रिश्ता है यह बहुत अनोखा जैसी मैं माटी आप कुम्हार।

यूं तो आप काम बहुत है करते पर कुछ ही मैं लिख पाया

लैंट

हुई गलती कोई मुझसे तो शमा आपसे चाहता हूं।



# तारो का दाल आ जाता है।

दिन का अंतिम प्रह्लाद बताता,  
चिड़ियों का दाल नीड़ों को जाता,  
डीप प्रज्वलित करने का वह वक्त निकट आता जाता है,  
तारो का दाल आ जाता है।

दिन भर रवि उष्म फैलता,  
थककर अब बतलाता जाता,  
समय समाप्ति हुई और अपनी लालिमा फैला जाता है।  
तारो का दाल आ जाता है।

क्रीड़ा कर बचे लौटा रहे  
कुछ हार गए कुछ जीत गए  
संतोष बिठा मन में अपने बच्चों का दल घर जाता है।  
तारो का दाल आ जाता है।

नभ जो था कुछ पल पहले नीला,  
अब हो गया है कला-सूना,  
तारे इसके साथी बनते पर नभचर का साथ चला जाता है।  
तारो का दाल आ जाता है।

ਕਸੁਧਾ ਪਰ ਥਾ ਥੋਰ-ਥਾਰਾਬਾ,  
ਅਥ ਛਾ ਗਯਾ ਹੈ ਬਸ ਸਨਾਠਾ  
ਤੁਝੁਗਣ ਦੇਖ ਸਦਾ ਰੋਤੇ ਸਾਥੀ ਤਨਕਾ ਨ ਬਨ ਪਤਾ ਹਾ।  
ਤਾਰੋ ਕਾ ਦਾਲ ਆ ਜਾਤਾ ਹਾ।



# तुम मेरी स्थिति समझा पाओगे?

उस सवेरे हम बढे थे,  
अपने डरादों पर ढढ़ खड़े थे,  
किन्तु थोड़े से डरे थे,  
फिर भी पता पर हम चले थे,  
तब भी सोचा था नहीं की यह स्थिति होगी हमारी,  
हंस पड़े थे सब मगर, उपहास तुम यह सह पाओगे?  
तुम मेरी स्थिति समझा पाओगे?

उस वर्क खड़े थे हम पथ पर,  
सब चलते रहते हंसते हमपर,  
मत हंस मुसाफिर क्या इस अश्रु की ज्वाला तुम सह  
पाओगे?  
तुम मेरी स्थिति समझा पाओगे?

उस दिन खड़ा होकर सुना,  
उपहास ही जग से मिला,  
आह तो निकल मुख से गयी,  
इससे अधिक कुछ न हुआ,

ਮत ਹੁੰਦ ਜਗਤ ਅਥ ਆਹ ਕੀ ਵਾਯੂ ਪਵਨ ਦੇ ਤੱਡ ਜਾਓਗਾ।  
ਤੁਮ ਮੇਰੀ ਲਿਖਿਤ ਸਮਝਾ ਪਾਓਗੇ?



# यामिनी भी आज गाती

थुन्य की डस भीमटा में,  
अवनि की निस्तब्धता में,  
पा शशि का साथ देखो कौन से स्वर को लगाती,  
यामिनी भी आज जात।

श्रोताओं की मंडली न आती,  
डसा राग को यहाँ सुन न पाती,  
फिर भला क्यों गए रही है, कौन से उर को लुभाती,  
यामिनी भी आज जात॥

राग यह जो अब है गाती,  
क्या किसी गम को छिपाती,  
या किसी के स्वप्न को अपने सुरो से है सजाती,  
यामिनी भी आज गात।

